अध्ययन सामग्री
एम॰ ए (संस्कृत)
द्वितीय सेमेस्टर (CC IX Unit-I)
प्रश्नपत्र –
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
आरा (वी॰ कुं॰ सिं॰ वि०)

मृच्छकटिकम् (कथावस्तु)

महाराज शूद्रक कृत 'मृच्छकटिकम्' सामान्य जन-जीवन को आधार बनाकर सामाजिक पृष्ठभूमि पर लिखी गयी यथार्थवादी नाट्यकृति है। यह एक चरित्र प्रधान प्रकरण (नाटक का एक प्रकार) है। किसी प्रकरण का वृत्त लौकिक कवि कल्पित या लोकवृत्त पर आधारित होना चाहिए। मृच्छकटिक की कथा कल्पना प्रसूत है। लोकप्रसिद्ध प्रेमवृत्त पर आधारित इस प्रकरण की रचना की गई है। नाटक की प्रमुख वस्तु उसका व्यापार होता है। यही किसी भी नाटक को गति प्रदान करता है। इसमें कथोपकथन के माध्यम से अभिनय को आगे बढ़ाना चाहिए। मृच्छकटिक की कथा अभिनय के द्वारा आगे बढ़ती है। इस प्रकरण में नाटककार ने सामाजिक को निरन्तर आगे बढ़ने के लिए सर्वत्र कौतूहलपूर्ण अवसर और सुयोग दिए हैं। इसकी दूसरी विशेषता यह है कि इसके नाटककार ने कथावस्तु का चयन राजन्य वर्ग को छोड़कर मध्यम वर्ग से किया है। उज्जयिनी के मध्यवर्गीय समाज की दैनिक परिचर्या को इस रूपक का आधार बनाकर कवि ने इसे अत्यधिक स्वाभाविकता दे दी है। अपनी विशिष्ट कथावस्तु के कारण ही कवि ने इस प्रकरण को संस्कृत

नाट्य साहित्य में एकमात्र यथार्थवादी प्रकरण कहलाने का श्रेय प्रदान किया है। जहाँ कालिदास और भवभूति के नाटक में हमें काव्य और उदात्त भावना के दर्शन होते हैं, वहाँ मृच्छकटिक में जीवन की ऊष्मा और कठोर वास्तविकता के दर्शन होते हैं। यह नाटक तत्कालीन जन-जीवन की सम्पूर्ण झाँकी प्रस्तुत करने में समर्थ है। इसमें कुल सत्ताईस प्रकार के पात्र आए हैं। इनमें राजकर्मचारी, व्यापारी, चोर, सिपाही, संन्यासी, दासी, वैश्य, गणिका आदि तरह-तरह के पात्र हैं। इस नाटक के दो प्रमुख विभाग है एक चारुदत्त और वसन्तसेना का प्रेम तथा दूसरा आर्यक की राज्य प्राप्ति। प्रथम भाग भासकृत 'दरिद्र चारुदत्त' का ही अनुसरण है, द्वितीय भाग नाटककार की अपनी मौलिक कल्पना पर आधारित है। इसमें कुल 10 अंक हैं, जिनके अलग-अलग नाम भी दिये गये हैं।

प्रथम अंक 'अलंकारन्यास' कहलाता है। इसमें उज्जयिनी की प्रसिद्ध वारवनिता वसन्तसेना को राजा का श्यालक शकार वश में करना चाहता है। वह अंधेरी रात में विट के साथ उसके पीछे जा रहा है। शकार उसे भटकाकर अपने घर को चारुदत्त का घर बता देता है। वसन्तसेना घर में प्रवेश कर जाती है। चारुदत्त का मित्र मैत्रेय शकार को डाँटता है। वसन्तसेना चारुदत्त से वार्तालाप के बाद अपने आभूषण उसी के यहाँ रखकर चली जाती है।

द्वितीय अंक का नाम 'द्यूतकर संवाहक' है। इसमें चारुदत्त की दानशीलता की घटनाएँ वर्णित हैं। तृतीय अंक का नाम 'सन्धिच्छेद' है इसमें शर्विलक नामक एक ब्राह्मण चोर का चरित्र वर्णित है। चतुर्थ अंक 'मदनिका शर्विलक' नाम से अभिहित किया गया है। इसमें शर्विलक द्वारा चारुदत्त के घर से वसन्तसेना की चुरायी गयी रत्नावली के सहारे मदनिका को मुक्ति तथा चारुदत्त

की पत्नी धूता का वसन्तसेना की चुरायी गयी रत्नराशि के बदले अपने आभूषण दे देना वर्णित है।

पंचम अंक का नाम 'दुर्दिन' है इसमें वर्षा-ऋतु का सुन्दर वर्णन है। साथ ही वसन्तसेना और चारुदत्त का प्रेमपूर्ण मिलन भी चित्रित है। छठा अंक 'प्रवहण विपर्यय' कहलाता है इसमें भूल से वसन्तसेना का शर्विलक के हाथों में पड़ जाना वर्णित है। सातवाँ अंक 'आर्यक-पहरण' कहलाता है - इसमें चारुदत्त के मित्र आर्यक का राजा के द्वारा बन्दी बना लिया जाना चित्रित है। आठवां अंक 'वसन्तसेना मोटन' नाम से अभिहित है - इसमें वसन्तसेना का शकार द्वारा गला घोंटा जाना तथा चारुदत्त का अभियोगी बनाया जाना वर्णित है। नवें अंक का नाम 'व्यवहार' है - इसमें अत्याचारी राजा द्वारा चारुदत्त पर मुकदमा चलाए जाने तथा उसे अभियुक्त मानकर फांसी दिए जाने का वर्णन है। दसवां अंक 'संहार' कहलाता है। इसमें आर्यक द्वारा 'पालक' राजा का वध तथा उसके द्वारा चारुदत्त का सम्मान वरी किया जाना, शकार को अभियुक्त मानकर उसे मृत्युदण्ड देना, परन्तु चारुदत्त के कहने पर मुक्त कर दिया जाना और चारुदत्त का वसन्तसेना के साथ विवाह आदि घटनाएँ वर्णित हैं।

मृच्छकटिक का वस्तु-विधान संस्कृत नाट्य-साहित्य की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यह संस्कृत का प्रथम यथार्थवादी नाटक है, जिसे दैवी कल्पनाओं एवं आभिजात्य वातावरण से मुक्त कर कवि यथार्थ के कठोर धरातल पर अधिष्ठित करता है। शास्त्रीय दृष्टि से जहाँ यह एक ओर प्रकरण का रूप उपस्थित करता है, वहाँ पाश्चात्य ढंग की कॉमेडी की भाँति भी मनोरंजकता से पूर्ण लगता है। प्रकरण में कवि कल्पित कथावस्तु का विधान किया जाता है और इसका नायक कोई इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति न होकर धीरप्रशान्त

लक्षण से युक्त कोई ब्राह्मण, वणिक अथवा अमात्य होता है। इसकी नायिका कुलजा अथवा वेश्या दोनों में से कोई एक या दोनों ही होती है। इसका कथानक मध्यम श्रेणी के व्यक्तियों से सम्बद्ध होता है, अतः इसमें मध्यम श्रेणी के व्यक्तियों की चारित्रिक दुर्बलताएँ प्रदर्शित की जाती हैं। इसके पात्रों में कितव (धूर्त), द्यूतकार, सभिक, विट, चेट आदि होते हैं। इस दृष्टि से मृच्छकटिक प्रकरण सिद्ध होता है, नाटक नहीं। प्रकरण में दस अंक होते हैं, जो इस प्रकरण में हैं। पाश्चात्य कथा-विकास की दृष्टि से इसकी पाँच अवस्थाएँ दिखाई पड़ती हैं – प्रारम्भ, विकास, चरम सीमा, निगति एवं अन्त। प्रथम अंक में वसन्तसेना का चारुदत्त के घर अपने आभूषणों को रखने से कथा का 'प्रारम्भ' होता है। इसके बाद कथानक का आगे विकास होता है। वसन्तसेना के आभूषणों का चुराया जाना तथा उसके बदले में धूता का रत्नमाला देना एवं वसन्तसेना का अभिसार 'विकासावस्था' के सूचक हैं। शकट-परिवर्तन और वसन्तसेना की शकार द्वारा हत्या 'चरम सीमा' के अन्तर्गत है। अन्तिम अंक में चारुदत्त का प्राण दण्ड 'निगति' और वसन्तसेना तथा चारुदत्त के विवाह की राजाज्ञा 'अन्त' है। भारतीय कथा-विधान के विचार से मृच्छकटिक में अर्थप्रकृतियाँ, कार्यावस्थाओं एवं सन्धियों का नियोजन अत्यधिक सफलतापूर्वक किया गया है। इसके प्रथम अंक में वसन्तसेना का पीछा करते हुए शकार के इस कथन में नाटक का 'बीज' प्रदर्शित हुआ है। द्वितीय अंक में कर्णपूरक का वसन्तसेना को चारुदत्त का प्रवारक दिखाना एवं वसन्तसेना का प्रसन्न होना 'बिन्दु' है। तृतीय अंक में जुआड़ियों का प्रसंग मूलकथा को विच्छिन्न कर देता है। यह घटना प्रासंगिक कथा के रूप में प्रकट होती है। यहीं से शर्विलक का चरित्र प्रारम्भ होता है और मूल कथा के अन्त तक चलता है। अतः शर्विलक की कथा 'पताका' एवं परिव्राजक भिक्षु का प्रसंग 'प्रकरी' है। अन्त में चारुदत्त

द्वारा वसन्तसेना को पत्नी के रूप में स्वीकार करना 'कार्य' है। कार्यावस्था का विधान इस प्रकार है — प्रथम अंक में वसन्तसेना का चारुदत्त के गृह में आना तथा चारुदत्त का उसकी ओर आकर्षण, 'आरम्भावस्था' है। वसन्तसेना का चारुदत्त के गृह में अपने आभूषण रखकर जाने से लेकर पञ्चम अंकपर्यन्त तक की घटना 'यत्न' है। छठे अंक से लेकर दसवें अंक तक की घटनाएँ 'प्राप्त्याशा' के रूप में उपस्थित होती हैं। इन घटनाओं में फलप्राप्ति की आशा अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में दोलायमान रहती है। बौद्धभिक्षु के साथ वसन्तसेना का सहसा आगमन 'नियताप्ति' है और वसन्तसेना तथा चारुदत्त का विवाह 'फलागम'। इसमें पञ्चसन्धियों का विधान भी उपयुक्त है। प्रथम अंक के प्रारम्भ से वसन्तसेना के इस कथन में 'चतुरोमधुरश्चायमुपन्यासः' (स्वगत कथन) 'मुखसन्धि' दिखाई पड़ती है। 'प्रतिमुखसन्धि' प्रथम अंक में ही वसन्तसेना के इस कथन से प्रारम्भ होती है — 'आर्यः यद्येव महमार्यस्य अनुग्राह्या' और पंचम अंक के अन्त तक दिखाई पड़ती है। 6ठे अंक के प्रारम्भ से लेकर दसवें अंक तक चाण्डाल के हाथ से खड्ग छूट जाने एवं वसन्तसेना के इस कथन में — आर्याः! एष अहं मन्दभागिनी यस्याः कारणादेष व्यापद्यते — 'गर्भसन्धि' है। अन्तिम अंक में चाण्डाल की उक्ति 'त्वरितं का पुनरेषा' एवं शकार के इस कथन में 'आश्चर्यः प्रत्युज्जीवितोऽस्मि' तक 'अवमर्शसन्धि' चलती है। इसी अंक में 'नेपथ्ये कलकलः' से लेकर अन्त तक 'निर्वहण सन्धि दिखाई पड़ती है। इस प्रकार 'मृच्छकटिक' का वस्तुविधान अत्यन्त सुन्दर तथा शास्त्रीय स्वरूप का निर्वाह करने वाला है।

इसमें कथावस्तु के तीन सूत्र दिखाई पड़ते

है जो परस्पर गुंफित हैं — वसन्तसेना एवं चारुदत्त का प्रणय-प्रसंग, शर्विलक तथा मदनिका की प्रेम कथा एवं राजनैतिक क्रान्ति जिसके अनुसार अत्याचारी राजा पालक का विनाश एवं गोपालपुत्र आर्यक का राज्याभिषेक होता है। इसमें वसन्तसेना और चारुदत्त की प्रणय कथा आधिकारिक कथा है और शेष दोनों कथाएँ प्रासंगिक हैं। आधिकारिक या मुख्य कथा की अपनी विशिष्टताएँ हैं। इसकी पहली विशेषता है कि यह प्रेम नायक की ओर से प्रारम्भ न होकर नायिका की ओर से होता है। वसन्तसेना चारुदत्त के प्रेम को प्राप्त करने के लिए अधिक क्रियाशील और स्पष्ट है, जबकि नायक निष्क्रिय दिखाई पड़ता है। इसकी दूसरी विशेषता यह है कि मध्य में आकर प्रेम पूर्णता को प्राप्त करता है तथा पुनः इसमें अप्रत्याशित रूप से नया मोड़ आता है और प्रेम में बाधाएँ उपस्थित हो जाती हैं, किन्तु अन्त होते-होते नायिका का प्रेम पूर्ण हो जाता है। शर्विलक और मदनिका की प्रणय कथा मुख्य कथा को गति देनेवाली है, क्योंकि शर्विलक ही राजनैतिक क्रान्ति का एक प्रधान अंग है। कथा को फल की ओर ले जाने में उसका महत्त्वपूर्ण योग दिखाई पड़ता है। इसके सभी मुख्य पात्र मुख्य घटना से सम्बद्ध हैं और वे फलागम में सहायक होते हैं। आर्यक का राज्यारोहण चारुदत्त के अनुकूल पड़ता है और राजाज्ञा से ही वह वसन्तसेना को वधू के रूप में ग्रहण करता है। इस प्रकार प्रासंगिक कथा मुख्य कथा पर शासन न कर उसके विकास में गति प्रदान करती है। कवि ने तीनों कथाओं को बड़ी कुशलता के साथ परस्पर संश्लिष्ट कर अपने प्रकरण को उत्तम बनाया है।